The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 3 | March 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

साहित्य एवं समकालीनता: महिला लेखिकाओं के विशेष संदर्भ में

डॉ0 ऊषा शर्मा
प्रवक्ता, अध्यापक शिक्षा विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल - ushasharma9216@gmail.com

1.1 प्रस्तावना:

साहित्य और समाज का सबंध अटूट है। साहित्यकार का अस्तित्व समाज से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। जो साहित्यकार समाज से अलग है उसका मूल्य शून्य के बराबर है प्रत्येक युग का साहित्य अपने युग का साक्षी और प्रतिनिधि है। आज साहित्य जितने व्यापक सरोकारों तथा बहुआयामी संदर्भों में लिखी जा रही है, उनमें स्त्री भी अपने लेखन से अपना सहभाग दे रही है और अपनी एक पहचान बना रही है। साहित्य के क्षेत्र में स्त्री का सहभाग नया नहीं है। आज उसकी सहभागिता 'स्त्री अस्मिता' और 'स्त्री स्वतन्त्रता' को लेकर चल रही है। भारत के बदलते परिदृश्य में उनका साहित्य स्त्री की स्वतन्त्रता, उनके वैचारिक विस्तार और नये संस्कार संदर्भों को रेखांकित करता है।

साहित्यिक क्षेत्र में महिलाओं की सर्जनात्मक प्रतिभा स्वतंत्रयोत्तर काल में ही तीव्रता के साथ उभरने लगी है। उसके पूर्व लेखन के क्षेत्र में स्त्री का योगदान विशेष उल्लेखनीय नही है। "साहित्यकार का मूल धर्म है सृजन। सृजन के उत्स में जो पीड़ा और संदेवना है जो अनुभूति और दृष्टि है जो उल्लास और उन्मेष है उनमें महिला और पुरूष साहित्यकार की समानता भी है और अन्तर भी। वे दोनों एक ही जीवन के भोक्ता है, फिर भी उनके हाशिए अलग है, उनकी व्याख्याओं का मर्म अलग है, उनकी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति अलग है, क्योंकि कही कुछ है जो पुरुष और स्त्री एक होकर भी अलग है और अलग होकर भी एक है। अभिव्यक्ति की कई समस्याएँ और कई संकट अब साहित्यकारों के लिए समान है इसमें कोई सन्देह नही। किन्तु अभिव्यक्ति के कुछ पड़ाव और प्रतिबन्ध एंव कुछ अवरोध और अभियोग ऐसे है जो भारतीय साहित्यकारों की अपनी विशेष विरासत है।"

राजनाथ शर्मा का कहना है,

“कवि या लेखक अपने समय का प्रतिनिधि होता है उसको जैसा मानसिक खाद मिलता है वैसी ही उसकी कृति होती है।"

सहित्यकार अपनी युगीन परिस्थितियो से प्रभावित न हो यह कदापि संभव नहीं है दरअसल सहित्य युगीन परिस्थितियों के अनुसार स्वमेव परिवर्तित होता रहता है। वस्तुतः इस प्रकार का परिवर्तन एक अनिवार्यता भी है। प्रस्तुत परिवर्तन समकालीन साहित्यकार को समय के साथ या समय से बांधकर चलने की प्रेरणा देता है। साहित्य का मकसद महज मनोरंजन नही है मानव जीवन की तमाम समस्याओं पर विचार करके उसके कारणों से अवगत कराना ही साहित्य का उद्देश्य है। इन समस्याओं की पहचान के लिए, समय के लिए, समय के साथ चलना अनिवार्य है क्योंकि युगीन परिस्थितियों के अनुसार मनुष्य की समस्याएँ और प्राथमिकताएँ भी बदलती रहती है। मानव जीवन के बाधक तत्वो को हटाकर उसके विरूद्ध संघर्ष करना और दूसरों को संघर्षशील बनाना सहित्यकार का दायित्व है वास्तव में वही साहित्यकार समकालीन है।

समकालीन साहित्यकार के इस संघर्ष को **डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित** ने यो व्यक्त किया है। "वह उस व्यग्रता को पकडता है जो बृहत्तर समाज को विकल कर रही होती है और अभिव्यक्ति की राह खोज रही होती है अर्थात् उसकी अनुकूलता और उसका समर्पण इस लोक चेतना के प्रति होता है। उसका पक्षधर बनकर वह व्यग्र करने वाली अवांछित स्थितियों के विरुद्ध संघर्ष की भूमिका तैयार करता है। एक अर्थ में लोक का नेतृत्व, पथ-निर्देश करता है। स्पष्ट है कि इस भूमिका में वह संघर्ष, विरोध या विद्रोह की अपनी किसी भी स्थिति का स्वीकर्ता होता है।"

जाहिर है कि समकालीन लेखक समाज की यथास्थिति वर्णन से या केवल समय के साथ चलने के लिए बद्ध नही है वह परिर्वतन प्रक्रिया में अपनी भागीदारी के प्रति सचेत है।

समकालीन महिला लेखन का विषय परिदृश्य :

समकालीन महिला लेखन समकालीन समाज की ही उपज है। समकालीन लेखिकाओं ने अपने अनुभव क्षेत्र से ऐसी रचनाये लिखी है, जिनमे समाज की दोहरी मानसिकता का पर्दाफाश, स्त्री सन्दर्भों को घर-परिवार, समाज के बीच रखकर उसकी भिन्न स्थितियों एंव दुःख दर्द का चित्रण, घर-परिवार से बाहर निकलकर कार्य करने वाली स्त्री की दोहरी भूमिका का यथार्थ अंकन, आधुनिक युग में स्त्री-पुरुष संबन्धों में आये बदलाव की सूक्ष्मता से प्रस्तुति एंव मानवीय रागात्मकता और संबन्धों के बिखराव से उत्पन्न सूनापन आदि का चित्रण उपलब्ध है।

स्वतन्त्रता प्रप्ति के साथ भारत में सामाजिक परिवर्तन हुआ। इस बदलते परिवेश का प्रभाव महिला जगत पर पड़ा है। साहित्यकारों ने सामाजिक चुनौतियों को बड़ी गंभीरता से समझा है और उसकी अभिव्यक्ति अपनी रचनाओं में बड़ी कुशलता से की है। ये समस्याएँ वैयक्तिक भी है और सामाजिक भी। सामाजिक स्वर पर लेखिकाओं ने प्रायः परिवार को चुन लिया है। संयुक्त परिवार का टूटन, दाम्पत्य

संबन्धों का ह्रास आदि मुख्यतः उनका विषय बना। मेहसत्रिसा परवेज, मन्नू भण्डारी, मालती जोशी आदि अधिकांश लेखिकाओं ने इन्ही विषयों की चर्चा की है।

सढ़िवादी मानसिकता पर लेखिफाओं ने तीखा व्यंग्य प्रस्तुत किया है। भारतीय संस्कृति में विवाह का अपना महत्व है। लेकिन आजकल की परिस्थितियों में वैवाहिक संस्था में भी विसंगतियों पैदा हो गयी है। विवाह के बीच की समस्याओं को इन लेखिकाओं ने संवेदना के स्तर पर समझने का प्रयास किया है। उनकी मान्यता है कि शोषित स्त्री के द्वंदों के पीछे कुछ अंश तक आज की विवाह संस्था जिम्मेदार रही है समाज को संतुलित रूप से चलाने हेतु, नैतिक मान्यताओं को बनाये रखने के लिए एक अनिवार्य तथ्य साबित होता है। दहेज प्रथा, कुरूपता, जातिव्यवस्था, उच्च शिक्षा आदि कई बाते लड़की के सामने वैवाहिक समस्या बनकर आती है। कभी अर्थाभाव के कारण विवाह की समस्या जटिल होती रही है। विवाह की सौदेबाजी से अधिकांश स्त्रियों को गुजरना पड़ता है। कई बार इस सौदेबाजी में वह नकारी जाती है। समकालीन महिला लेखन में स्त्री मन का द्वन्द्व, यौन वर्जनाओं को नकार देने के साथ दैहिक और काम संबधो की खुली स्वीकृति, दाम्पत्य संबंधो का आन्तरिक सूनापन, विवाहपूर्व एवं विवाहेत्तर यौन संबंधों की वकालत, विवाह और प्रेम के वास्तविक सरोकारों की तलाश, कामकाजी स्त्री की दोहरी भूमिका व शिक्षा के द्वारा उसकी स्थितियों में आये बदलाय के प्रश्नों को बड़ी सूक्ष्मता से उकेरा गया है। प्रायः सभी लेखिकाओं ने समाज में व्याप्त लिंग भेदी मानसिकता और व्यवहार को लेकर कलम चलाई है। यदि किसी लेखन में इसके विरूद्ध गहरा प्रहार है, तो किसी में इसे महज उजागर करने की कोशिश देख सकते है।

प्रमुख समकालीन महिला लेखिकायें :

हिन्दी का महिला-लेखन समकालीन दौर में अधिकाधिक विकसित और प्रखर है। इसका दो कारण है। पहला है, पहचान की पारदर्शिता का विकास और दूसरा है, महिला-लेखन की सर्जनात्मकता का इतिहासबोध। एक जमाने में जो महिला लेखन हाशिए पर भी चर्चित नाही था वह समकालीन दौर में केन्द्र में आता दिखाई देता है।

1. ममता कालिया :

विषयचयन की दृष्टि से एक व्यापक दृष्टिकोण रखनेवाली लेखिका है ममता कालिया। वे लेखन के सीमित दायरे की पैदावर नहीं है उनका रचना-संसार परिवार की सीमाओं में न रहकर राजनीतिक विसंगतियों को भी चित्रित करता है। 'छुटकारा' 'एक अदत औरत', उसका यौवन, 'प्रतिदिन', 'सीट नं0 6' आदि इनके कहानी संग्रह है जबकि 'बेघर' 'नरक दर नरक' आदि इनके उपन्यास है। स्त्री जीवन के विभिन्न आयामों को उन्होंने आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है।

2. दीप्ति खण्डेलवाल :

दीप्ति खण्डेलवाल की सभी रचनाओं में पति पत्नी के बदलते संबंध, बदलते पारिवारिक परिवेश से संबन्धित है। 'यह तीसरा', 'कड़वे सच', 'धूप के अहसास', 'मारीमन', आदि इनके संग्रह है जबकि 'प्रिया', 'कोहरे' तथा प्रतिध्वनियां उनके प्रसिद्ध उपन्यास है। उनकी कहानियों में कई जगह ऐसी आधुनिक स्त्री का चित्रण है जो अपनी शरीर के भोग के लिए जीने की आकांक्षा रखाती है। संवेदनाओं को गहरी भावुकता से जुड़ी हुई उनकी लेखनी अभिव्यक्ति के स्तर पर इतना जोश दिखाती है कि समाज के सारे झूठे आदर्श सामने खड़े हो जाते हैं।

3. चित्रा मुदुगल :

समकालीन हिन्दी महिला कथाकारों में चित्रा मुद्गल का अपना विशिष्ट स्थान है आर्थिक दबावों का सीधा प्रभाव जिस तेजी से हमारे समाज पर पड़ रहा है उसे वैविध्यपूर्ण तथ्य एंव सधे हुए शिल्प के साथ उन्होने अपनी कहानियों में उभारा है। उनके चार उपन्यास एवं नौ कहानी संग्रह है। 'अपनी वापसी', 'इस हमाम में', 'जहर ठहरा हुआ', 'लाक्षागृह', ग्यारह लंबी कहानिया', जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे है', 'मामला आगे बढ़ेगा अभी' आदि इनके कहानी संग्रह है जबकि 'दौड़',' एक जमीन अपनी' तथा 'आवाँ' तथा 'गिलिगडु' इनके उपन्यास है। 'सबक', 'जंगल का राज' 'नीति कथाएँ' आदि बाल कहानियों है साथ ही 'मेरी रचना यात्रा', 'तहखानो में बन्द आइनो के अक्स', 'असफल दाम्पत्य की कहानियों' आदि पुस्तको का संपादन किया है।

4. मेहरून्निसा परवेज :

मेहरून्निस्सा परवेज एक ऐसी रचनाकार है जिनका एक अलग दृष्टिकोण है। समकालीन कहानी की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह सामाजिक यथार्थ से जुड़ी है। उनकी रचनाऐं इसको प्रमाणित करती है। 'आदम और हब्बा', 'गलत पुरुष', 'टहनिया पर धूप', फालगुनी', 'अतिम सच्चाई', 'कोई नहीं', 'एक और सैलाब', 'आयोध्यावासियों', 'आकश नील', 'धूप के अहसास', 'बूँद का हक', आदि इनके कहानी संग्रह है जबकि 'आँखों की दहलीज', 'उसका घर', 'उसका घर', 'कोरजा', 'अकेला पलाश', 'पत्थर वाली गली, आदि उनकी उपन्यास रचनाएँ है।

5. नासिरा शर्मा :

नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों द्वारा मानव जीवन में व्याप्त अकेलापन, घुटन, इन्सान के दिल और दिमाग की टकराहट आदि को अभिव्यक्ति दी है। 'इन्सानी नस्त', 'पत्थर गली', 'सबीना के चालिस चोर', आदि इनके कहानी संग्रह है जबकि सात नदियों एक समन्दर', 'जिन्दा मुहावरे', ठीकरे की मंगनी',

'शाल्मती' आदि उनके उपन्यास है। नासिरा शर्मा का रचना-संसार किसी बाद या विमर्श में बाधा नहीं है। समकालीन महिला कहानिकारों में उनकी खास पहचान है।

6. सूर्यबाला :

समकालीन लेखिकाओं में विषय की संपन्न लेखन की अधिकारिणी है सूर्यबाला। सूर्यबाला अपनी व्यंग्यात्मक प्रस्तुतीकरण के कारण प्रसिद्ध रही है, 'एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम', 'दिशाहीन' 'मैं मुडेर पर', 'मरियल तीतर' आदि उनके कहानी संग्रह है जबकि 'सुबह के इन्तजार तक', 'मेरे संधि पत्र', 'अग्नि पंखी', 'दीक्षान्त', 'यामिनी कथा; आदि उनके उपन्यास है। 'कुछ अदद जाहिलो के साथ' उनका प्रसिद्ध व्यंग्य संग्रह है। बालपन के भोलापन का चित्रण हो या स्त्री मन की कुण्ठा की अभिव्यक्ति हो, इस सबको बड़ी सुक्ष्मता से चित्रित करने में सूर्यबाला की तूलिका सार्थक साबित हुई है।

7. कृष्णा अग्निहोत्री :

भारतीयों मूल्यो के प्रति आस्था रखनेवाली लेखिका है कृष्णा अग्निहोत्री। 'विरासत', 'पंछी पिंजडे के', 'नपुंसक', 'जिन्दा आदमी', 'टेसू की टहनियां उनकी प्रसिद्ध उपन्यास कृतियों है। 'स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी नाम से एक समीक्षा ग्रन्य उन्होने लिखा है और 'आधा आदमी' नाम से एक नाटक भी। 'लगता नहीं है दिल मेरा' उनकी आत्मकथा है। आधुनिकता बोध से युक्त लेकिन परम्परा को माननेवाली स्त्री का चित्रण ही उन्होंने अपनी रचनाओं में किया है। उन्होंने स्त्री को देवी और भोग्य से परे सिर्फ स्त्री माना है और एक स्त्री के मानव होने के नाते सारे मानवीय अधिकार सुलभ कराने की आवश्यकता अपने साहित्य कर्म के माध्यम से जताई है।

8. नमिता सिंह :

"महिला कथाकरों पर यह आरोप लगाया जाता है कि वे घर-परिवार, प्रेम-टूटने आदि की कहानियों ही लिखती रही है और यह उनकी सामर्थ्य सीमा है इस आरोप को नमिता का लेखन बेबुनियाद सिद्ध करता है महिला दायरो से बाहर आकर नमिता सिंह ने निम्न मध्यवर्गीय आदमी के संघर्ष से अपने को प्रतिबद्ध किया है।

9. मृणाल पाण्डे :

स्त्री अस्मिता के लिए अपनी कलम से संघर्ष करने वालो में अग्रणी है मृणाल पाण्डे। उन्होंने स्त्री स्वातंत्रय के प्रश्न का बड़ी सूक्ष्मता से रेखांकित किया है। 'दरम्यान', 'शब्द-बेधी', 'एक नीच ट्रेजड़ी', 'एक स्त्री का विदागीत', 'यानी की एक बात थी', 'चार दिन की जवानी तेरी', 'आदि उनके कहानी संग्रह है जबकि 'विरुद्धा' और 'पटरगपुर पुराण' उनके उपन्यास है।

10. सुधा अरोड़ा :

सुधा अरोड़ा की रचनाओ में सामाजिक जागरण की प्रस्तुति हुई है। इन्होंने अपनी कहानियों में नये जीवन परिवेश को चित्रित किया है और घर-परिवार से बाहर समाज के बृहत्तर जीवन यर्थाथू को ही वस्तु धरातल पर स्वीकारा है। 'बगैर तराशे हुए', 'कमजोर', 'युद्ध विराम', आदि इनके कहानी संग्रह है जबकि 'पानी की जमीन' इनकी उपन्यास कृति है।

11. मालती जोशी :

"मालती जोशी का जीवन के प्रति दृष्टिकोण आस्थावादी है। नारी मन की तह तक उत्तरी लेखिका ने पारिवारिक जीवन में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को सहजता से प्रस्तुत किया है। मालती जोशी ने स्त्री जीवन के हर एक पहलु पर उन्होने अपनी लेखनी चलायी है। "मध्यांतर', 'समर्पण का सुख', 'दादी की घड़ी', 'जीने की राह', 'राग-विराग', 'शोभा यात्रा', 'एक घर सपनो का' 'पटाक्षेप' पराजय' आदि उनके कहानी संग्रह है जबकि 'सहचारिणी, "पाषाण युग' आदि औपन्यासिक कृतियाँ है।

12. शशि प्रभा शास्त्री :

उन्होंने अपनी रचनाओं में पारंपरिक अनाचारों के प्रति विरोध प्रकट किया है। साथ ही आधुनिकता के गुण एंव अवगुणों का उद्घाटन भी किया है। 'भूली हुई शाम', 'दो महायुद्धो के बीच', 'अनुत्तरित', आदि इनके कहानी संग्रह है एंव 'हर दिन इतिहास', 'क्योंकि', 'उम्र एक गलियारे की' आदि इनके उपन्यास है।

13. कुसुम अंसल :

इनका हिन्दी लेखिकाओं में विशिष्ट स्थान है। इन्होने मुख्यतः उच्च अभिजात्य वर्गों की मानसिकता को ही चित्रित किया है। उन्होने कथा साहित्य के साथ काव्य क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। 'स्पीड ब्रेकर', 'पत्ते बदलते है' आदि कहानी संग्रह है और 'अपनी-अपनी यात्रा', 'उदास आँखे', 'नींव का पत्थर, 'एक और पंचवटी', 'उस तक', रेखाकृति आदि उनके उपन्यास है।

14. निरूपमा सेवती :

समाज में कामकाजी स्त्री की दोहरी भूमिका पर इन्होने बखुबी लिखा है। 'आतंक बीज', 'खामोशी को पीते हुए', 'काले खरगोश', 'कच्चा मकान', 'भीड़ में गुम', आदि इनकी कहानी संग्रह है जबकि 'पतझड़ की आवाजे', 'बटता हुआ आदमी', 'मेरा नरक अपना है' आदि उनके उपन्यास है।

15. मंजुल भगत :

इन्होंने अपनी लेखनी दीन-दुखियों, दलितों, उत्पीड़ितों एंव बिछड़े हुए लोगों की संवेदना को उभारने के लिए चलाई है। उन्होंने अपने देश के सांस्कृतिक मूल्यों को कायम रखने की कोशिश की है। 'गुलमोहर के गुच्छे', 'सफेद कौवा', 'आत्महत्या के पहले' आदि इनके कहानी संग्रह है। 'बेगाने घर में', 'लेडिज क्लव', इन्द्रधनुष आदि उनके औपन्यासिक कृतियों है।

16. प्रभा खेतान :

प्रभा जी ने स्त्री का चित्रांकन अधिक मानवीय रूप में करते हुए उसे समाज में प्रतिष्ठित करने का जोरदार प्रयास किया। उनका लेखन अपने जीवानुभवों का खजाना था। स्त्री के बारे में अलिखित, अखोजा, आछूता या अद्‌वितीय क्या है अनोखा नहीं, परन्तु कुछ तो ऐसा होगा जो बिल्कुल हम स्त्रियों का निजी सत्य होगा। हमारा अपना भोगा हुआ सच। "यही बजह है हम उनकी रचनाओं में आत्मसाक्षात्कार की प्रवृत्ति देख सकते है। स्त्री के हक की घोषणा कर देने वाली प्रभा खेतान अपने साहित्य जगत में नारी के प्रति विशेष रूप से नारीवादी दृष्टिकोण को बहुआयामी स्तर पर अंकित किया है।

17. मैत्रेयी पुष्पा :

समकालीन लेखन में कहानी व उपन्यास दोनों विधाओं में समान रूप से ख्याति प्राप्त लेखिका है मैत्रेयी पुष्पा। उन्होंने अपनी रचनाओं स्त्री को उनके स्वत्व व सुगंध के साथ चित्रित किया है इनके उपन्यासो में स्त्री की सम्पूर्ण छवि परिदृशित होती है। यद्‌यपि वे समाजिक सरोकार की लेखिका है लेकिन मुद्‌दा स्त्री ही है। इदन्नमम, चाक, झूला नट विजन ये मात्र रचनाऐं नही है बल्कि स्त्री के शोषण के विरूद्‌ध उसके प्रतिरोध के दस्तावेज है। उन्होंने अपने उपन्यासों में आधुनिक दृष्टि से नारी की शख्सियत को निखारने पर जोर दिया है।

उपर्युक्त लेखिकाओं के अलावा समकालीन सृजनात्कता के अन्तर्गत मधु कांकरिया, किसलय पंचोली, ऊर्मिला शिरीष, जया जादवानी, उषा महाजन, सुनीता जैन, रमा सिंह, चन्द्रकांता, नीरजा माधव आदि के नाम भी विशेष उल्लेखनीय है।

महिला कथाकारों की स्त्री केन्द्रित रचनाओं की यही सबसे महत्वपूर्ण प्रासंगिकता है। अतः ये रचनायें निरन्तर असख्य पाठ-पाठांतरों की संभावनाओं का सृजन कर रही है।

उपसंहार :

सहित्य मानव जगत का सजीव चित्रण करने वाला दर्पण है। जीवन के कटुतम एवं मधुरतम ध्रवों के मध्य सेतु का कार्य करता हुआ साहित्य अपनी यथातथ्यता के साथ उपस्थित रहता है तथा साहित्यकार मूल्यों के सामंजस्य के साथ-साथ परिवेशगत यथार्थ की तटस्थ अभिव्यक्ति का प्रयास निरन्तर करता रहता है। समकालीन महिला साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से इस प्रक्रिया को जीवंत बनाये रखा है।

उन्होंने अपनी रचनाओं में स्त्री के विविध रूपों को परम्परागत और परिवर्तित संवेदनाओं, अनुभूतियों एंव प्रवृत्तियों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है जिससे स्त्री के विविध रूपों में विकास, विघटन और बदलाव के बिन्दु परिलक्षित होता है। उनकी रचनाओं का केन्द्र स्त्री एवं उसकी संवेदना है।

स्त्री वास्तव में समाज की धुरी है, उसका विकास और उसकी दशा सीधे अर्थों में समाज के यथार्थ को प्रतिबिम्बित करती है। स्त्री के विकास का संबंध प्रारम्भ से ही शिक्षा से रहा है। जिस समाज में शिक्षा का स्तर उन्नत एंव समता मूलक रहा, वह समाज उतना ही सभ्य, समृद्ध एंव प्रगतिशील दिखाई देता है। शिक्षा और साहित्य का गहरा संबन्ध है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो समाज के किसी भी तबके को बदलने एवं चेतना लाने की सामर्थ्य रखती है, वहीं दूसरी ओर साहित्य वह साधन है जो बिना किसी दुराव, भय एवं शक्ति के वशीभूत हुए बिना उस बदलाव को समाज के कोने-कोने तक पहुँचाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. नवलजी नालंदा विशाल शब्द सागर, पृ.सं. 140
2. भ्रमर रवीन्द्र समकालीन, हिंदी कविता, पृ.सं. 09
3. शर्मा डॉ. जया प्रकाश, समकालीन हिंदी काव्यकशा और दिशा, पृ.सं. 08
4. चंद सुरेश, समकालीन मूल्यबोध और संशय की एक रात, पृ.सं. 100
5. उपाध्याय डॉ. विशम्भरनाथ, समकालीन सिद्धांत व साहित्य, पृ.सं. 16
6. शर्मा राजनाथ, साहित्यिक निबंध, पृ.सं. 325
7. दीक्षित डॉ. आनंद प्रकाश, समकालीन कविता संप्रेषण : विचार आत्मकथ्य, पृ.सं. 24
8. सिन्हा डॉ. रघुवीर, आधुनिक हिंदी कहानी समाजशास्त्रीय दृष्टि, पृ.सं. 24
9. श्रीवास्तव डॉ. रूपाली, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, पृ.सं. 02